ओ३म्

सुधारक

गुरुकुल झज्जर का लोकप्रिय मासिक पत्र

वर्ष 68 अंक 4 दिसम्बर 2020 मार्गशीर्ष 2077 वार्षिक मूल्य 150 रु०

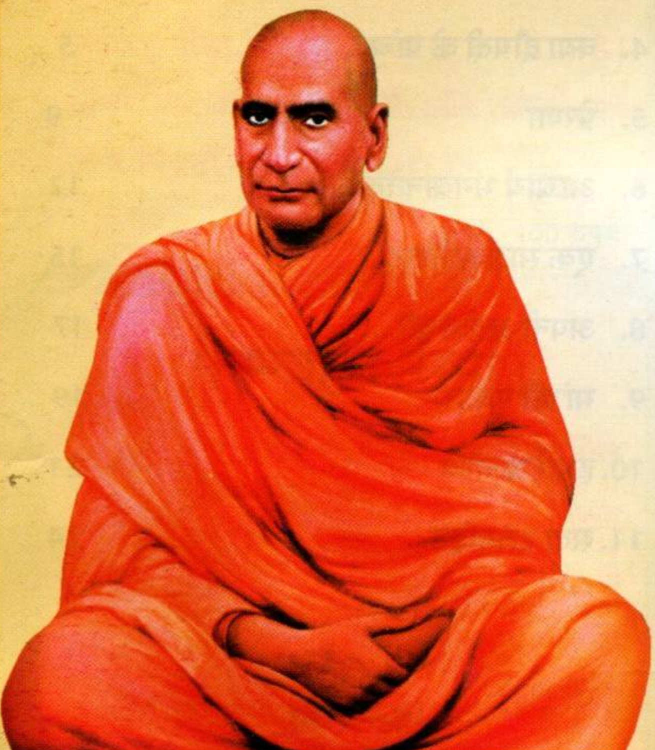

स्वामी श्रद्धानन्द जी

बलिदान – 23-12-1926

पं० रामप्रसाद बिस्मिल

बलिदान – 19-12-1927

संस्थापक : स्व० स्वामी ओ३मानन्द सरस्वती
सम्पादक : विरजानन्द दैवकरणि
प्रधान सम्पादक : आचार्य विजयपाल
व्यवस्थापक : ब्र० अरुण आर्य

सुधारक के नियम व सविनय निवेदन

1. सुधारक का वार्षिक शुल्क 150 रुपये है तथा आजीवन सदस्यता शुल्क 1500 रुपये है।
2. यदि सुधारक 20 तारीख तक नहीं पहुंचता है तो आप व्यवस्थापक सुधारक के नाम से पत्र डालें। पत्र मिलते ही सुधारक पुनः भेज दिया जाएगा।
3. वार्षिक शुल्क तथा आजीवन शुल्क मनीआर्डर द्वारा **'व्यवस्थापक सुधारक'** के नाम भेजें। सुधारक वी.पी. रजिस्ट्री द्वारा नहीं भेजा जाएगा।
4. लेख सम्पादक सुधारक के नाम भेजें, लेख छोटे, सरल, संक्षिप्त, सारगर्भित तथा मौलिक होने चाहिएं तथा स्पष्ट, शुद्ध एवं सुन्दर लेख में कागज के एक ओर लिखे जाने चाहिएं। अशुद्ध एवं गन्दे लेखवाला लेख नहीं छापा जाएगा। लेखों को प्रकाशित करना न करना तथा उनमें संशोधन सम्पादक के अधीन होगा। अस्वीकृत लेख डाक-व्यय प्राप्त होने पर ही वापिस भेजे जाएंगे।
5. सुधारक में विज्ञापन भी दिए जाते हैं, परन्तु विज्ञापन शुद्ध एवं वास्तविक वस्तु का ही दिया जाएगा।
6. यह सुधारक मासिक पत्र समाजसुधार की दृष्टि से निकाला जाता है। इसमें आपको धर्म, यज्ञकर्म, समाजसुधार, देश व समाज की स्थिति, ब्रह्मचर्य, योगासन आदि विषयों पर लेख पढ़ने को मिलेंगे।
7. सुधारक के दस ग्राहक बनानेवाले सज्जन को एक वर्ष तक निःशुल्क सुधारक भेजा जाएगा तथा पचास ग्राहक बनानेवाले सज्जन को दो वर्ष निःशुल्क सुधारक भेजा जाएगा तथा उसका फोटो सहित जीवन परिचय सुधारक में निकाला जाएगा।

—व्यवस्थापक

वर्ष :68 अंक : 4
दिसम्बर 2020 विक्रमाब्द 2077
दयानन्दाब्द 196 कलिसंवत् 5121
सृष्टिसंवत्-1, 96, 08, 53, 121

विषय-सूची

क्र.सं.	विषय	पृष्ठ
1.	वैदिक विनय	1
2.	सम्पादकीय	2
3.	सकारात्मक सोच...	4
4.	क्या द्रौपदी के पांच...	5
5.	प्रेरणा	9
6.	आचार्य भगवान्देव...	12
7.	एक सार्वकालिक...	15
8.	अपनी अतीत की...	17
9.	मां की पुकार	19
10.	हमारे कर्त्तव्य	21
11.	सदा उत्साहित...	24

नोट :- लेखक अपने लेख का स्वयं जिम्मेवार होगा।

सुधारक मासिक पत्र का वार्षिक शुल्क १५० रुपये भेजकर स्वयं ग्राहक बनें और दूसरे साथियों को भी ग्राहक बनाकर सुधार कार्य में सहयोग दीजिये।

-व्यवस्थापक सुधारक

वैदिक विनय

ब्रह्म सूर्यसमं ज्योतिः द्यौः समुद्रसमं सरः।
इन्द्रः पृथिव्यै वर्षीयान् गोस्तु मात्रा न विद्यते।।

यजु० २३. ४८।।

विनय

क्या तुम इस स्वयंप्रकाश और सर्वजगत्-प्रकाशक सूर्य को देखकर आश्चर्य करते हो कि इसके समान कोई दूसरी ज्योति इस संसार में कहां हो सकती है? देखो, यह ब्रह्म, यह वेद उसी तरह स्वयंप्रकाश और सर्वजगत्प्रकाशक है। हमारे अन्दर यह ब्रह्म, यह ज्ञान, यह ज्ञानमय ब्रह्म अन्दर की ज्योति है, अन्दर का सूर्य है, असली सूर्य है। क्या तुम इस पारावार समुद्र को देखकर समझते हो कि इस जैसा जलाशय, इतना बड़ा सरोवर और कोई नहीं हो सकता? नहीं,जरा जरा सूक्ष्मता से देखो कि यह अन्तरिक्ष एक इसी प्रकार जलवाष्पमय बड़ा भारी जल समुद्र है, हमारे अन्दर इसी प्रकार का हृदयान्तरिक्ष , बहुत बड़ा मानस सरोवर है, इतना ही गम्भीर, इतनी ही बड़ी बड़ी तरङ्गों वाला मनस्तत्व का बना हुआ दिव्य समुद्र है। क्या तुम बड़ी भारी पृथिवी को देखकर सोचते हो कि इससे बड़ी, इससे अधिक वर्षोंवाली चिरकालीन कोई और वस्तु क्या हो सकती है? परन्तु देखो यह इन्द्र, यह आदित्य इस पृथिवी से लाखों गुना बड़ा है। हमारे अन्दर यह 'इन्द्र' आत्मा, यह परमात्मा पृथिवी से अनन्तों गुना बड़ा है और यदि इसकी वर्षों से गणना करें तो इसका कभी आदि ही नहीं है, यह अनादि है, सनातन है। और क्या तुम इस पृथिवी के बृहत् परिणाम को देखकर पूछते हो कि क्या कोई ऐसी वस्तु भी हो सकती है जिसकी कोई मात्रा नहीं, कोई परिमण नहीं? तो देखो, इस आदित्य की 'गो' रूप किरणें इतनी हैं कि उनकी मात्रा नहीं हो सकती, वे गिनी नहीं जा सकती। अन्दर आत्मा-इन्द्र की गोरूप किरणें, वाणी आदि आत्म-शक्तियां इतनी हैं कि उनका किसी तरह परिमाण नहीं किया जा सकता, बस यही कहा जा सकता है कि ये अनन्त हैं, ये अनन्त हैं।

शब्दार्थ-

(ब्रह्म) वेद ज्ञानमय ब्रह्म (सूर्यसमं) सूर्य जैसी (ज्योतिः) ज्योति है। (द्यौः) अन्तरिक्ष सागर या मानस सागर (समुद्रसमं) पार्थिव समुद्र जैसा (सरः) ज़लाशय, सरोवर है। (इन्द्रः) आदित्य और महान् आत्मा (पृथिव्यै) पृथिवी से (वर्षीयान्) बड़ा या अधिक वृद्ध है। (गोः) किरणों का या आत्मशक्तियों का (मात्रा)परिमाण (न विद्यते) नहीं है।

★ अपने वे नहीं होते जो केवल चित्र में साथ खड़े होते हैं, किन्तु अपने वे होते हैं, जो विपत्ति और कष्ट में साथ खड़े होते हैं।

सम्पादकीय

चतुर्वेद पारायण यज्ञ अवैदिक नहीं है

अग्निहो के स्थूल लाभों में जल-वायु की शुद्धि, रो निवृत्ति, वृष्टिलाभ और वेदमन्त्रों की रक्षा की गणना की जा सकती है। कुछ विद्वानों का मत है कि चतुर्वेदपारायण यज्ञ में अन्त्येष्टि कर्म में बोले जाने वाले मन्त्रों का भी पाठ करना पड़ेगा जबकि वहां किसी की अन्त्येष्टि क्रिया नहीं हो रही। ऐसा सन्देह करने वालों की सेवा में निवेदन है कि वेदों में मानवोपयोगी अनेक प्रकार के मन्त्र वर्णित हैं। जैसे-मेधाप्राप्ति, दुर्गुण नाश, सद्गुणप्राप्ति, धनप्राप्ति की कामना, गृहसौख्य, पुत्रलाभ, राज्यादि, ऐश्वर्य की कामना, यश और वर्चस् की उपलब्धि, विश्वशान्ति, ईर्ष्यानाश, दुःस्वप्न निवारण, रोगोपचार, वनस्पति विज्ञान, ईश्वर के गुण कर्म स्वभावों का विवरण, ज्योतिष विद्या, भूगर्भविद्या, विमानविद्या आदि।

इस प्रकार के मन्त्रों का विनियोग उस-उस कर्म के लिए भी गृह्यसूत्रों आदि में किया गया है। परन्तु यह नियम ऐकान्तिक है, सर्वत्र लागू नहीं होता। चतुर्वेदपारायण का अभिप्राय केवल जलवायु की शुद्धि, रोगनिवृत्ति, वृष्टि की प्राप्ति तथा वेदरक्षा तक ही सीमित मानना उपयुक्त है। यजुर्वेद के ३९वें अध्याय के दसवें से तेरहवें मन्त्र तक अन्त्येष्टि में विनियुक्त हैं, वहां इनका अर्थ केवल मृतक संस्कार के लिए ही नहीं है, वहां भी मन्त्र के प्रत्येक भाग से वायुशुद्धि करना ही अभिप्रेत है। धातु-प्रत्यय के योग से तथा निरुक्त की दृष्टि से एक शब्द के अनेक अर्थ करने की योग्यता वैदिकपदों में है। महर्षि कात्यायन के श्रौतसूत्र के मत में अन्त्येष्टि कर्म वाले मन्त्र अश्वमेध यज्ञ के लिए हैं। यदि ये मन्त्र अन्त्येष्टि कर्म के लिए ही है तो इनका विनियोग अश्वमेधयज्ञ में क्यों किया गया? इससे सिद्ध होता है कि वेदपारायण यज्ञ में गृह्यसूत्र और श्रौतसूत्रों में वर्णित किसी कर्मविशेष में विनियोग किये गये मन्त्रों के अर्थ के साथ कोईसम्बन्ध नहीं है।

ऋग्वेद का 'चत्वारिशृंगाः' यह मन्त्र प्रसिद्ध है, इसका यज्ञपरक अर्थ यास्काचार्य ने निरुक्त तथा गोपथ ब्राह्मण में लगाया है। ऋग्वेद ८-१९-५ मन्त्र से सिद्ध है कि वेदमन्त्रों से यज्ञ करना चाहिये। सांख्यायन गृह्य सूत्र का कथन है कि वेद की प्रत्येक ऋचा से सक्तु धान आदि की आहुति देवें। ऋग्वेदीय कल्पद्रुमकार का मत है कि पापक्षय की कामना करने वाले व्यक्ति की वेदसंहितााओं से हवन करना चाहिये। इस प्रकार मेरे विचार में चतुर्वेदपारायण यज्ञ करने में कोई दोष नहीं है, अपितु लाभ ही है।

★ दण्ड देने में नहीं अपितु क्षमा कर देने में बड़प्पन है।

इसी प्रकार बहुकुण्डीय यज्ञ भी लाभकारी हैं। जितने कुण्ड अधिक हों उतनी सुगन्धि ज्यादा होगी। हां! ११, २१, ५१, १०१, १५१ आदि संख्याओं से युक्त हवन कुण्डों का कोई महत्व नहीं है। जैसी सुविधा हो उतने ही यज्ञकुण्ड बना सकते हैं।

महर्षि दयानन्द सरस्वती ने सत्यार्थप्रकाश के तीसरे समुल्लास में लिखा है-प्रश्न-होम से क्या उपकार होता है? उत्तर-सब लोग जानते हैं कि दुर्गन्धयुक्त वायु और जल से रोग, रोग से प्राणियों को दुःख और सुगन्धित वायु तथा जल से आरोग्य, और रोग के नष्ट होने से सुख प्राप्त होता है। प्रत्येक मनुष्य सोलह-सोलह आहुति (से यज्ञ करें) इससे अधिक करे तो बहुत अच्छा है।

इसीलिये आर्यवर शिरोमणि महाशय, ऋषि, महर्षि, राजे, महाराजे लोग बहुत सा होम करते थे और कराते थे। जब तक इस होम का प्रचार रहा, तब तक आर्यावर्त देश रोगों से रहित और सुखों से पूरित था, जो अब भी प्रचार हो तो वैसा ही हो जाये।

संस्कारविधि में यज्ञ कुण्ड में दो लाख आहुतियां देने तक का भी वर्णन है, ये आहुतियां एक विशाल कुण्ड में भी दी जा सकती हैं तथा सुविधा और व्यवस्थानुसार अनके यज्ञकुण्ड भी बनाये जा सकते हैं। ये दो लाख आहुतियां चारों वेदों के लगभग दस बार पारायण करने से ही सम्भव हैं अतः चतुर्वेदपारायण यज्ञ की स्वीकृति ऋषि दयानन्द के मत में भी सिद्ध की जा सकती है। यज्ञ क्योंकि वेदमन्त्रों से ही करने का विधान है और वेदों में दो लाख मन्त्र नहीं हैं अतः उनकी ही बार-बार आहुति करने से ही दो लाख की पूर्ति सम्भव है।

महर्षि दयानन्द जी ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका के वेदविषय विचार प्रकरण में लिखते हैं-.....ईश्वर की प्रार्थनापूर्वक ही सब कर्मों का आरम्भ करना होता है। वेदमन्त्रों के उच्चारण से यज्ञ में तो उसकी प्रार्थना सर्वत्र होती है। इसलिये सब उत्तम कर्म वेदमन्त्रों से करना ही उचित है।

प्रश्न-यज्ञ में वेदमन्त्रों को छोड़ के दूसरे का पाठ करें तो क्या दोष है?

उत्तर-अन्य के पाठ में यह प्रयोजान सिद्ध नहीं हो सकता। क्योंकि जैसा ईश्वर का वचन सर्वथा भ्रान्तिरहित सत्य होता है, वैसा अन्य का नहीं।

इत्यादि प्रमाणों से सिद्ध है यज्ञ वेदमन्त्रों से ही करना चाहिये और दो लाख आहुतियां वेदमन्त्रों से भिन्न अन्य किसी श्लोक आदि के द्वारा नहीं दी जानी चाहियें। अतः चतुर्वेद पारायण यज्ञ करना अवैदिक नहीं है किन्तु वेदानुकूल ही है।

-विरजानन्द दैवकरणि
९४१६०५५७०२

०००-०००

➪★ यदि आत्मिक शान्ति मिल गई तो सारा विश्व शान्तिमय प्रतीत होता है।

सकारात्मक सोच से मनोबल बढ़ता है

-कृष्णदेव आर्य, गुरुकुल झज्जर

एक दृष्टि से देखा जाये तो परमपिता परमात्मा ने सब प्राणियों में मनुष्य को ही सबसे उत्तम बनाया है। यह मानव पर निर्भर है कि वह अपने जीवन को अपनी सोच व अपने कर्मों द्वारा और कितना उच्चतम बना सकता है। कर्म करना मनुष्य का प्रधान कर्त्तव्य है। मेरे अन्तर्मन के अनुसार जैसा तुम सोचोगे वैसा ही बन जाओगे भले ही नकारात्मक विचार हों अथवा सकारात्मक। अखिल ब्रह्माण्ड की तरंगें तुम्हारी इच्छा पूरी करने में जुट जायेंगी और उन्हें वैसा ही फल प्राप्त होगा।

भले ही परिस्थितियां तुम्हारे अनुकूल न हों नकारात्मक फल प्राप्त होने की प्रबल सम्भावना हो तो भी तुम्हें सकारात्मक सोच ही सोचनी चाहिये। यही मानव का अभिप्रेत है। कार्य करने से पहले मन में विचार उत्पन्न होते हैं और उसी अनुसार वह कार्य को क्रियान्वित करता है। सोच का आधार मनुष्य के संस्कारों पर निर्भर करता है। और संस्कार मुख्य तौर पर तीन सिद्धान्तों के अनुसार बनते हैं। पहले मनुष्य के प्रारब्ध के अनुसार, दूसरा माता-पिता द्वारा बच्चे को दिए जाते हैं। तीसरे आदमी जिसका संग कर रहा है। यहां तीसरे प्रकार के संस्कार सबसे ताकतवर होते हैं। क्योंकि यह कहावत बिल्कुल सटीक बैठती है कि जैसी संगत वैसी रंगत। जब व्यक्ति आत्मबल से विवेक बुद्धि द्वारा अच्छे लोगों का संग करेगा अच्छी शिक्षाप्रद पुस्तकों का अध्ययन करेगा तो उसकी सोच भी सकारात्मक बनेगी। यही सकारात्मक सोच उसको रचनात्मक कार्यों की ओर प्रेरित कर अग्रसर करती जायेगी। फलस्वरूप उसका मानव जीवन सफल हो जायेगा। यद्यपि मनुष्य कर्म करने में स्वतंत्र तो है, किन्तु यदि वह कार्य उसके हित में हो दूसरों की भलाई के लिए एवं समाज और राष्ट्र के हित के लिए किया जायेगा तो वह सकारात्मक और रचनात्मक श्रेणी की गिनती में आ जायेगा। सकारात्मक सोच रखने वाले व्यक्ति मानवीय गुणों से सम्पन्न होते हैं तथा सदैव दूसरों से प्यार मुहब्बत करते हुए आपसी भाईचारा बनाए रखने में ही विश्वास रखते हैं। किन्तु आज कोरोना के कारण कुछ समय के लिए एक दूसरे से दूरी बनाए रखना ही श्रेयस्कर है। जान है तो जहान है। ऐसे लोग परिस्थिति के अनुसार स्वयं तो हर हाल में प्रसन्नचित्त व आनन्दित रहते हैं परन्तु जो-जो उनके सम्पर्क में आता है वह भी उनके जीवन की सुगन्धित आभा से प्रभावित होकर प्रसन्नता अनुभव करता है। किन्तु सामाजिक अर्थों के

शेष अगले पृष्ठ पर

★ दुःख मिटाने की सर्वोत्तम औषधि कार्य में सलग्न हो जाना है।

क्या द्रौपदी के पांच पति थे?

-आनन्ददेव शास्त्री, पूर्व प्रवक्ता, दिल्ली सरकार

महाभारत के विषय में यह प्रसिद्ध है कि द्रौपदी के पांच पति थे, अर्थात् द्रौपदी का विवाह किसी एक पाण्डव से नहीं हुआ था अपितु पांचों पाण्डवों के साथ प्रतिदिन एक-एक करके पांच दिन हुआ। यही बात टेलिविजन आदि से भी प्रसारित होती है। प्रतिदिन एक-एक से द्रौपदी का विवाह होने की बात सभापर्व के उनचासवें अध्याय में लिखी भी है। इस बात को सत्य सिद्ध करने के लिये महाभरत में झूठे कथानक भी घुसेड़ दिये गये हैं, जिनको अलग छांटना आर्य टिप्पणीकारों को भी कठिन हो गया। महाभारत में द्रौपदी से उत्पन्न पांच पुत्रों की नाम सहित कल्पना भी कर ली गई है।

पाठक कृपया इस प्रकरण पर फिर ध्यान दें, जिससे यह स्पष्ट हो जाता है कि द्रौपदी का विवाह पांचों पाण्डवों के साथ नहीं हुआ, अपितु बड़ा होने के कारण एकमात्र युधिष्ठिर के साथ सम्पन्न हुआ था। यद्यपि स्वयंवर में द्रौपदी को अर्जुन ने जीता था, किन्तु स्वयंवर स्थल पर भयंकर युद्ध प्रारम्भ हो गया था, जिसमें विरोधी राजाओं को पराजित करके ब्राह्मण वेशधारी पाण्डव द्रौपदी को साथ लेकर कुम्हार (भार्गव) के घर जहां वे ठहरे हुए थे, कुन्ती के पास ले गये। तब अपने पुत्र धृष्टद्युम्न को द्रुपद ने गुप्तरूप से कुम्हार के घर ब्राह्मण वेशधारी पाण्डवों के विषय में यह जानने के लिये भेजा कि ये कौन लोग हैं, जिन्होंने द्रौपदी को स्वयंवर में जीता है। बाद में यही बात द्रुपद के पुरोहित ने भी युधिष्ठिर से पूछी। युधिष्ठिर के बताने पर जब द्रुपद को यह विश्वास हो गया कि ये तो पांचों पाण्डुपुत्र ही हैं। तब द्रुपद ने उन्हें कुम्हार के घर से सम्मानपूर्वक अच्छे वस्त्रादि पहना कर, रथ में बैठा कर अपने महल में बुलाया और वहां उनका स्वागत करने के बाद स्वादु भोजन कराया, तत्पश्चात् पुरोहित ने यज्ञाग्नि द्वारा द्रौपदी का विवाह युधिष्ठिर से कराया।

यह प्रकरण श्लोकों के प्रमाणों के साथ यहां प्रस्तुत है:-

सकारात्मक सोच.........

साथ में सकारात्मक नकारात्मक दोनों प्रकार की सोच के दृष्टिकोणों वाले लोगों की तुलना कर उनमें अन्तर बताया है। पाठक स्वयं ही अनुमान लगा सकेंगे कि सकारात्मक दृष्टिकोण वाले लोग ही रचनात्मक कार्यों में अपना महत्त्वपूर्ण योगदान दे सकते हैं और वे ही सम्पूर्ण मानवता की भलाई के लिये उपयोगी सिद्ध होते हैं। अतः मनुष्य को सदैव सकारात्मक सोच के साथ रचनात्मक कार्यों को करके ही अपना जीवन सफल करना चाहिए।

★ श्रम से स्वास्थ्य तथा स्वास्थ्य से सन्तोष मिलता है।

महाभारत के आदिपर्व के पैंतालीसवें अध्याय में लिखा है कि स्वयंवर वाले दिन जब पाण्डवों को भिक्षा लेकर आने में देरी हुई, तक कुम्हार (भार्गव) के घर में बैठी कुन्ती को चिन्ता हुई कि कहीं मेरे पुत्रों को किसी ने मार न दिया हो। तब दोपहर के समय पांचों पाण्डव द्रौपदी को स्वयंवर में जीतकर कुम्हार के घर कुन्ती के पास पहुंचे। फिर छियालीसवें अध्याय में लिखा है कि कुन्ती पुत्रों ने कुन्ती के पास जाकर कहा- माता हम भिक्षा ले आये हैं। तब कुन्ती ने बिना देखे ही अपने पुत्रों से कह दिया कि 'तुम भिक्षा को बांट कर खा लो।' किन्तु जब कुन्ती ने द्रौपदी को देखा तो वह अपने कथन पर बड़ी पछताई कि मैंने बिना द्रौपदी को देखे ऐसा क्यों कह दिया। तब धर्मनाश से डरी हुई कुन्ती, द्रौपदी का हाथ पकड़ कर युधिष्ठिर के पास ले गई और बोली-हे पुत्र मैंने बिना देखे ही भिक्षा को बांट कर खाने को कह दिया अर्थात् अप्रत्यक्ष रूप से द्रौपदी के साथ विवाह क रने को कह दिया। बेटा तुम कोई ऐसा उपाय सोचो कि जिससे मेरी बात भी झूठी न हो और द्रौपदी को भी पाप न लगे। यहां द्रौपदी को पाप लगने का अर्थ है उसका पांच पतियों से विवाह। तब युधिष्ठिर थोड़ी देर कुछ विचार कर फिर अर्जुन के पास गया और बोला:-

त्वया जिता फाल्गुन याज्ञसेनी,
त्वयैव शोभिष्यति राजपुत्री।
प्रज्वाल्यतामाग्निममित्रसाहः
गृहाण पाणिं विधिवत् त्वमस्याः।।

अर्थ-हेअर्जुन! द्रौपदी को स्वयंवर में तूने जीता है, इसलिये यह राजपुत्री तुम्हारे साथ ही शोभा देगी। हे शत्रुनाशक तुम विवाह के लिये अग्नि जलाओ और विधिपूर्वक द्रौपदी के साथ विवाह करो।

यहां द्रष्टव्य है कि युधिष्ठिर ने यहां यह बिल्कुल नहीं कहा कि द्रौपदी का विवाह हम पांचों के साथ कर लें। यदि युधिष्ठिर को पांचों के साथ विवाह उचित प्रतीत होता तो वह ऐसा ही कहता, इससे विपरीत उसने अर्जुन को विवाह के लिये कहा। तब अर्जुन बोला:-

मा मां नरेन्द्रत्वमंधर्मभाजं
कृथान धर्मोऽयमशिष्ट दृष्टः।
भवान्निवेश्य प्रथमं ततोऽयं,
भीमो महाबहुरचिन्त्यकर्मा।।

अर्थ-हे राजेन्द्र! तुम मुझे अधर्म का भागी मत बनाओ, यह सभ्य पुरुषों का कहा हुआ धर्म नहीं है। पहले (बड़ा होने के कारण) आप द्रौपदी के साथ विवाह के अधिकरी हैं। यदि आप न करें तो भीम, मैं, नकुल या सहदेव अधिकारी हैं। इस श्लोक का इस प्रकार अर्थ न करके, यह अर्थ कर दिया गया कि युधिष्ठिर के विवाह करने के बाद हम चार भी उसी के साथ विवाह के अधिकारी हैं।

★ सत्य से साहस और शान्ति की प्राप्ति होती है।

एवंगते यत्करणीयमत्र: धर्म्यं
यशस्यं कुरु तद्विचिन्त्य।
पांचालराजस्य हितं चयत्स्यात्,
प्रशाधि सर्वेस्मवशेस्थितास्ते।।

अर्थ–ऐसी अवस्थाओं जो कर्तव्य धर्मयुक्त और यश को बढाने वाला हो और जिसमें द्रुपद का भी हित हो, वही सोचकर करें और हमें यथोचित आज्ञा दें। हम सब आपके आधीन हैं।

इन उपर्युक्त श्लोकों में ध्यातव्य बात यह है कि जब पाण्डव एक चक्करा नगरी से पांचाल देश को चले, तब वे द्रौपदी का स्वयंवर देखने चले थे। न कि भिक्षा मांगने और वे पांचाल नगरी में भार्गव (कुम्हार) के घर ठहरे थे। कुम्हार के घर से वे स्वयंवर देखने गये थे और इस बात का पता कुन्ती को भी था। क्योंकि कुन्ती एक शिक्षित और अनुभवी महिला थी। दूसरी बात यह कि क्या पाण्डव जो माता के आज्ञाकारी थे, कुन्ती को बिना बताये ही स्वयंवर जीतने पहुंच गये। यह बात बिल्कुल असंगत है कि कुन्ती को पाण्डवों के स्वयंवर में जाने का पता न हो। इस अवस्था में कुन्ती पाण्डवों को भिक्षा बांटकर खाने को कैसे कह सकती थी। अत: यह गपोड़ा है। और यदि पाण्डवों ने मजाक में भिक्षा शब्द कह भी दिया हो तो भी कुन्ती इस बात को जानती थी कि तेरे पुत्र स्वयंवर में गये थे, वे जीते या हारे वह इस बात की प्रतीक्षा में थी, न कि भिक्षा की में।

दूसरी बात ध्यान देने योग्य यह है कि स्वयंवर से पहले लम्बे समय से कुन्ती का यह नियम था कि पाण्डवों द्वारा लाई गई भिक्षा को पहले कुन्ती दो भागों में बांटती थी। उसमें से आधा भाग भीम को खाने को देती थी और शेष आधे भाग को कुन्ती सहित सब बांट कर खाते थे। इसलिये कुन्ती द्वारा अपने पुराने नियम विरुद्ध उन्हें ही बांटकर खाने की बात करना असत्य है।

इसके बाद वाले ऊपर लिखित श्लोक में कुन्ती ने युधिष्ठिर से कहा कि तुम ऐसा उपाय करो कि मेरी बात भी झूठी न हो और द्रौपदी को भी पाप न लगे।

इसमें यह बात ध्यान देने योग्य है कि कुन्ती ने युधिष्ठिर से कहा है कि द्रौपदी को भी पाप न लगे। पाठक स्वयं विचार करें कि पांच पुरुषों से विवाह करके द्रौपदी को क्या पुण्य प्राप्त होना था। द्रौपदी का पांचों से विवाह होना पाप भी है, अव्यवहारिक तथा सांसारिक एवं आर्य नीति के विरुद्ध भी है। पूरे संसार के इतिहास में कोई उदाहरण नहीं मिलता कि कोई राजकुमारी पांच पुरुषों से ब्याही गई हो। अत: इस तरह का विवाह अधार्मिक, अपयश कारक, रोगकारक, शास्त्रविरुद्ध और असम्भव है।

इससे अगले श्लोक में युधिष्ठिर ने अर्जुन से कहा–हे अर्जुन द्रौपदी तूने जीती है और तेरे साथ ही शोभा पायेगी, इसलिये तू ही द्रौपदी

★ अपनी प्रसन्नता दूसरे की प्रसन्नता में लीन कर देना ही प्रेम है।

से विवाह कर। तब अगले श्लोक मेंअर्जुन ने युधिष्ठिर से कहा कि तू मुझे पाप का भागी मत बना, क्योंकि बड़े भाई का विवाह होने से पहले छोटे भाई का विवाह होना पाप है। अत: आप जैसी आज्ञा देंगे हम वैसा ही करेंगे। इसके बाद वाला श्लोक जो यहां नहीं दिया गया, मिलावटी है क्योंकि उसमें युधिष्ठिर के बाद भीम आदि को भी द्रौपदी के साथ विवाह करने का अधिकार बताया है। जबकि हमारे शास्त्रों में तथा इतिहास में भी एक पत्नी के पांच पति होने का न तो विधान था न ही वर्णन है। इस श्लोक में यह भी लिखा है कि जिसमें द्रुपद का यश हो वह कार्य आप करें। क्या द्रुपद का यश अपनी पुत्री का पांच व्यक्तियों से विवाह करने में था। अत: पांचों से विवाह होना अपयशकारक भी था, अत: ऐसा विवाह होना एक बड़ी गप्प है।

आदिपर्व के ४९वें अध्याय में लिखा है- 'राजा ने युधिष्ठिर के पास जाकर कहा-'आज शुभ दिन है, इसलिये आज हमें द्रौपदी का विवाह अर्जुन से करना चाहिये।' इस पर युधिष्ठिर बोला:-

तमब्रवीत्ततो राजा धर्मात्मा युधिष्ठिर:
ममापिदारसम्बन्ध:कार्यस्तावद् विशंते।

अर्थ-तब धर्मात्मा युधिष्ठिर बोले- कि हे राजन्! मेरा भी विवाह आप अपनी पुत्री से करें। तब राजा द्रुपद बोला:-

भवान् वा विधिवत्पाणिं गृह्णातु दुहितुर्मम।
यस्य वा मन्यते वीर तस्य कृष्णामुपादिश।।

अर्थ-राजा द्रुपद बोले-हे वीर! या तो आप मेरी पुत्री के साथ विधिवत् विवाह करें या जिस भाई के साथ विवाह करना उचित समझें उसके साथ कर दें।

तत: समाधाय स: वेदपारग:
जुहाव मन्त्रै: ज्वलिते हुताशने।
युधिष्ठिरं चाप्युपनीयमन्त्रवि न्नयोजमास
सहैव कृष्णया।। आदिपर्व, अध्याय ४९

अर्थ-तब वेदपारगी पुरोहित ने मन्त्रों द्वारा अग्न्याधान कर, प्रज्वलित अग्नि में हवन किया। पश्चात् उस मन्त्रवेत्ता ने युधिष्ठिर को अपने पास बिठाकर विधिपूर्वक कृष्णा (द्रौपदी) से विवाह कर दिया।

ऊपर वाले श्लोक में आपने देखा कि पहले द्रुपद ने युधिष्ठर से कहा कि आज शुभ दिन है, आज हमें द्रौपदी का अर्जुन के साथ विवाह करना चाहिये। अगले श्लोक में युधिष्ठिर ने कहा कि राजन् आप मेरा अर्थात् (अर्जुन की बजाय मेरा) विवाह द्रौपदी से कर दें। उससे आगे वाले श्लोक में लिखा है कि द्रुपद ने युधिष्ठिर से कहा कि चाहे तो (भवान्) आप द्रौपदी के साथ विवाह करें, या आप **जिस एक** के साथ उसका विवाह कर दें। यहां द्रुपद ने तीन शब्दों का प्रयोग किया है- पहला भवान् (आप) यह अकेले युधिष्ठर के लिये है, इसके बाद 'यस्य' (जिसका) यह भी एकवचन है, इसके बाद 'तस्य' (उसका)

★ ज्ञान से शब्द समझ में आते हैं, अनुभव से अर्थ।

यह भी एकवचन है। अर्थात् द्रुपद ने चाहे युधिष्ठिर या अन्य किसी एक के साथ विवाह करने की बात स्पष्ट कही है। इसमें येषां (जिनका, तेषाम् उनका) शब्द का बहुवचन में प्रयोग नहीं किया गया है। इसलिये द्रुपद पागल नहीं था कि वह एक से कहकर पांचों से द्रौपदी का विवाह करता। इसके बाद वाले श्लोक में तो स्पष्ट लिखा है कि विवाह युधिष्ठिर से विधिपूर्वक हुआ। इसके बाद वाला श्लोक जो कि यहां उद्धृत नहीं है, मिलावटी है, क्योंकि उसमें बाद केचार दिनों में शेष चार पाण्डवों के साथ विवाह होना भी लिखा है। क्या विश्व के इतिहास में ऐसा कोई और उदाहरण भी है कि एक पुरुष से विवाह होने पर उसी राजकुमारी का अन्य चार पुरुषों से भी विवाह हुआ हो। अत: महाभारत में यह वर्णन मिलावटी और झूठा है। इस प्रकार का विवाह रोगकारक, बदनामी कारक और अधार्मिक है। क्योंकि पाण्डवों को धार्मिक कहा गया है, अत: यह पूरी तरह साफ है कि द्रौपदी का विवाह एकमात्र युधिष्ठिर से ही हुआ था, अन्य चार पाण्डवों से नहीं।

सम्पर्क सूत्र-
१११/१९ आर्यनगर, झज्जर
मो० ९९९६२२७३७७

प्रेरणा (Motivation)

-स्वामी देवव्रत सरस्वती

प्रेरणा अग्नि की उस चिंगारी के समान है जो काले कोयले को प्रज्वलित कर दहकता अंगारा बना देती है। बन्दूक का वह घोड़ा (ट्रिगर) है जिसके दबा देने से गोली अपने लक्ष्य को बेंध देती है। प्रेरणा वह विद्युत् ऊर्जा है जो निष्क्रिय व्यक्ति में भी साहस का संचार कर उसे सर्वाग्रणी बना देती है। प्रेरणा व्यक्ति की प्रसुप्त शक्ति को उद्‌बुद्ध कर उसकी अन्तरात्मा को जीवन संग्राम में विजय पथ का पथिक बना प्रथम पंक्ति में खड़ा कर देती है।

सीता की खोज में वानर वीरों की टोली खड़ी है। आगे समुद्र उसका उपहास कर रहा है। इसे पार कर लंका में सीता को ढूंढने के लिये किसका साहस है। सभी इस चुनौती को सुन मौन साधे खड़े हैं। अन्त में जम्वन्त ने कहा-हनुमान मैं वृद्ध होने के कारण लंका तक जा सकता हूं परतु लौटकर आने की सामर्थ्य मुझ में नहीं है। तुम युवा हो इसलिये अपनी शक्ति को पहचान कर इस परीक्षा की घड़ी में आगे बढो और हनुमान् ने समुद्र में छलांग लगा दी।

कौरव और पाण्डवों की सेना कुरुक्षेत्र के मैदान में आमने सामने खड़ी हैं। रणचण्डी अपना खप्पर भरने की प्रतीक्षा कर रही है। दोनों और शंख और रण वाद्य बज रहे हैं। यह दृश्य देख अर्जुन को व्यामोह ने घेर लिया और वह धनुष बाण को छोड़ रथ के कबूर पर बैठ

★ ईश्वर की ओर से आनन्द मिलता है, परन्तु दु:ख तो हम स्वयं उत्पन्न करते हैं।

गया। इस दृश्य को देख सभी हतप्रभ हैं। पाण्डव किंकर्त्तव्यविमूढ हो गये हैं। इस समय सारथि बने श्री कृष्ण ने अर्जुन को धीर बंधाते हुए कहा-हे अर्जुन! यह आत्मा अजर अमर है जिसे अग्नि जला नहीं सकती। वायु सुखा नहीं सकती और पानी गला नहीं सकता। ये कौरव अपने पाप के कारण पहले ही मरे हुये हैं। तुम तो केवल निमित्त मात्र हो। यदि तुम जीते तो सारी भूमि पर राज्य करोगे और रणभूमि में मारे गये तो स्वर्ग की प्राप्ति होगी। इसलिये उठो और युद्ध के लिये तैयार हो जाओ

प्रेरणा के दो प्रकार हैं-

१बाह्य प्रेरणा २ आन्तरिक प्रेरणा

बाह्य प्रेरणा के भी तीन भेद हैं-

१. भय के कारण प्रेरित होना जैसे परीक्षा में असफलता के भय से छात्र पढ़ने में प्रवृत्त होते हैं। किसी विभाग या कारखानों में कार्य करने वाले कर्मचारी इसलिये सतर्क रहते हैं कि कहीं हमें निष्कासित न कर दिया जाये। कहा भी है-**भय बिन प्रीति न होय गोपाला।**

२. प्रोत्साहन-धन की प्राप्ति, पदोन्नति एवं मान सम्मान के लिये भी व्यक्ति किसी कार्य के लिये प्रेरित होता है अथवा उसे प्रेरित किया जा सकता है। संस्कृत में लोकोक्ति है-**स्वार्थमनुदिश्य न मन्दोऽपि प्रवर्तते।** बिना स्वार्थ के मन्दबुद्धि भी किसी कार्य में प्रवर्तित नहीं होता।

३. परिस्थिति-कई बार ऐसी परिस्थिति बन जाती है कि उसका सामना करने के लिये लोग आलस्य, प्रमाद को त्याग साहस के साथ उसका सामना करने को खड़े हो जाते हैं। इस स्थिति में बाह्य और आन्तरिक दोनों प्रकार की प्रेरणा देखी जाती है।

बाह्य प्रेरणा के लाभ एवं हानि

१. भय के कारण व्यक्ति सावधान होकर अपने कर्त्तव्य का पालन करता है।

२. कार्य समय पर हो जाने से उत्पादन बढ़ जाता है।

३. व्यक्ति की कार्य क्षमता बढ़ जाती है। परन्तु यह प्रेरणा तभी तक प्रभावित करती है जब तक ऊपर से दबाव हो। दबाव हटते ही प्रेरणा भी चली जाती है।

हानियाँ

१. भय एवं दबाव के वातावरण में कार्य करने वालों में तनाव बढ़ता है।

२. कवल दण्डे के बल कार्य करने वालों की रचनात्मक क्षमता समाप्त हो जाती है।

३. कार्य की क्षमता कम हो जाने से अन्त में उत्पादन गिर जाता है।

प्रोत्साहन वाली प्रेरणा तभी तक बनी रहती है जब तक व्यक्ति में कुछ पाने की इच्छा रहे। जैसे एक व्यक्ति ने गधे पर सब्जी लाद रखी है। उसे कुछ ऊँचाई पर चढना था जिसे देख गधा ठिठक गया। उसके स्वामी ने एक गाजर निकाली और उसे खाने के लिये गधा आगे बढ गया। अब यदि गधा भूखा नहीं

★ संसार में रहते हुए भी जल में कमलपत्र की भांति निस्स्पृह होने का अभ्यास करो।

है तो वह गाजर खाने के लिये लालायित होगा ही नहीं। प्राय: देखा जाता है कि कर्मचारी अपना कोटा पूरा करने के पश्चात् कार्य रोक देते हैं।

२. आन्तरिक प्रेरणा

इसका उद्‌गम व्यक्ति के भीतर स्वत: ही होता है। जिस में आस्था की प्रधानता रहती है। इसमें चिन्तन की दिशा बदल जाती है। व्यक्ति आत्म विश्वास के साथ स्वत: ही अपने कार्य में संलग्न रहता है। इसके लिये निम्न उपाय हैं-

१.आन्तरिक प्रेरणा के लिये सर्वप्रथम भय, संकोच एवं आलस्य को त्याग आत्मविश्वास, उत्साह एवं पुरुषार्थ से आगे बढ़ें।

२. एक समय एक ही लक्ष्य पर ध्यान केन्द्रित करें।

३. महापुरुषों के प्रेरक जीवन चरित्रों का प्रतिदिन कुछ समय अध्ययन करना चाहिये।

४. इस कार्य के लिये आडियो, वीडियो की सहायता ली जा सकती है।

५. ऐसे मित्र बनायें जो स्वयं भी उन्नति के पथ पर अग्रसर हों और आपको भी प्रेरित करें। सप्ताह में एक दो बार अपने कार्य को आगे बढ़ाने के लिये उनसे परामर्श करें।

६. ईश्वर प्रत्येक आदमी को शुभ कार्य करते समय आनन्द उत्साह के भाव और अशुभ कार्य में भय, शंका, लज्जा के भाव प्रकट करता है। गलत कार्य करते समय हृदय की गति बढ़ जाती है। ऐसा प्रतीत होता है कि कोई हमें इस कार्य को रोकने से मना कर रहा है। यह ईश्वर की ओर से वर्जना है। परन्तु जिनका चित्त शुद्ध है उन्हीं को यह प्रेरणा स्पष्ट रूप से होती है। मलिन चित्त और पाप कर्म में आसक्त रजोगुणी लोगों को यह प्रेरणा अधिक प्रभावित नहीं करती। जैसे मलिन दर्पण में मुख साफ दिखाई नहीं देता।

प्रेरणा क्यों आवश्यक है?

१. प्रेरणा आपके आत्म-विश्वास को जागरित कर देती है। व्यक्ति की समस्त ऊर्जा एक ही स्थान पर केन्द्रित हो जाती है।

२. यह जीवन की गाड़ी को आगे बढ़ाती है और सफलता का मार्ग प्रशस्त करती है।

३. जैसे इंजिन रेलगाड़ी को आगे खींचता है वैसे ही प्रेरणा व्यक्ति को जीवन पथ पर आगे बढ़ने का मार्ग बतलाती रहती है।

प्रेरणा में बाधक तत्त्व-

१. अनावश्यक आलोचना।

२. अपमान।

३. जब उचित पात्र के स्थान पर कुपात्र को सम्मान मिलता है तब अच्छे कार्य करने वालों का उत्साह मन्द पड़ जाता है।

इनके निवारणार्थ-

१. किसी अच्छे कार्य के लिये प्रोत्साहन दें।

२. उन्हें सम्मानित करें।

३. दूसरों की सहायता करें परन्तु वे अपना कार्य स्वयं ही पूरा करें इसका ध्यान रखें।

✪✪✪

★ अतृप्त कामनायें और अहंकार ही समस्त दु:ख का मूल है।

आचार्य भगवान्देव जी गुरुकुल झज्जर की सेवा में प्रतिष्ठित व्यक्तियों की व्यक्तिगत, सामाजिक और देशहितैषी भावनाएं प्रस्तुत हैं।

कुरुक्षेत्र विश्विविद्यालय में अंग्रेजी विभागाध्यक्ष डॉ० तुलसीराम जी ने १९-१-१९६४ को पत्र लिखा-

......खजानसिंह एक होनहार विद्यार्थी है, चरित्रवान् है और गम्भीरता से काम करने वाला है। पर उसकी कुछ मौलिक कठिनाइयां हैं जो कि साधारणतया गुरुकुल अथवा गुरुकुल सम्बन्धी अनुशासन से अंगेजी साहित्य में प्रवेश करने वालों को होती हैं। यह तो स्पष्ट ही है कि भारतीय विद्यार्थी को आत्मिक शान्ति तो इससे मिलना कठिन है। इसके लिये फिर निरन्तर स्वाध्याय और चिन्तन करना आवश्यक है। आजीविका के लिये अवश्य कुछ साधन उपलब्ध हो जाते हैं। हां आगे चलकर जहां अंग्रेजी या अंग्रेज के ढंग से अध्ययन शैली की आत्मा तक जब विद्यार्थी पहुंचता है तो एक विशेष नम्रता और वास्तविक तथ्य के प्रति निर्लेप और निष्काम भाव का अनुभव अवश्यक होता है जोकि एक ऐतिहासिक को भी अपना कार्य करने में होता है। मैंने खजानसिंह से कहा है एक समय ऐसा था जब लोग अनेक प्रकार की समस्याओं के समाधान के लिए आचार्य भगवान्देव जी की ओर आशाभरी दृष्टि से देखते थे। यदि अंग्रेजी का अध्ययन करना है तो अंग्रेजी के बीच में ऐसे रहो जैसे पानी में कमल अथवा लंका में विभीषण रहता था।

आपका तुलसीराम

आर्यसमाज रामां मण्डी, भटिण्डा से श्री सत्यप्रकाश आर्य ने आर्यसमाज की प्रतिष्ठा बनी रहे इस अभिप्राय से १४=-६-१९६५ को लिखा-

श्री पूज्य आचार्य भगवान्देव जी,

सादर प्रणाम।

विषय-आर्यसमाज रामां मण्डी में मांस खाने वालों और दुराचारियों का अड्डा।

आपत्तिकाल में आर्यलोग आचार्यों का ही द्वार खटखटाया करते हैं। मैं आर्यसमाज का पुराना सदस्य हूं। मेरे दादा जी ने वस्तुतः आर्यसमाज रांमां को कायम किया और खून पसीना एक करके इसको सींचा। मेरे पूज्य पिता जी श्री ओम्प्रकाश ने जब से होश संभाला है, सारा जीवन इसी में बिताया है। परन्तु यहां के प्रधान म० निहालचन्द जी इसको अपनी जगह समझ बैठे हैं। पुराने सदस्यों को एक-एक करके निकाल दिया है। और ऐसे दुराचारी सदस्य भरती किये हैं जो दुराचारी, बदमाश, गुण्डे हैं और म० जी के पिट्ठू हैं। उदाहरण के लिये मैं श्री प्यारेलाल जी को लेता हूं। आज से दो वर्ष पूर्व यह स्थानीय सनातन धर्म सभा का मन्त्री था। यहां सनातन धर्म सभा की कोई संस्था नहीं है। पदलिप्सा की वजह से यह आर्यसमाज में घुस आया। आजकल यह भी म० जी का दायां हाथ है।

एक समय था जब श्री प्यारेलाल जी

★ विपत्ति अनुभव सिखाती है इसके लिए कोई विद्यालय नहीं होता।

रेलवे में सहायक स्टेशन मास्टर था। वहां पर इसका एक लड़की से नाजायज सम्बन्ध हो गया। वहां इसको मारने के लिये आये, उसी दिन यह रात को पैदल भाग कर अपने स्टेशन से गाड़ी ली। यहां आकर Sick Report करके रेलवे स्टेशन से हट गया। यहां भी यह बदचलनी से बाज नहीं आया। यहां के स्टेशन मास्टर को इसने धमकी दी कि मैं तुम्हारी लड़कियां उठा लूंगा। स्टेशन मास्टर ने पुलिस में रिपोर्ट कर दी, इसको सजा भी मिली। इसकी फाइल नं०२४८, केस सीरियल नं० १०१७ तारीख ३-१०-१९६२ को कोई भी देख सकता है।

पिछले दिवाली के दिनों इसने आर्यसमाज की बिल्डिंग में मांस पकाया और खाया खिलाया गया। हमने इसकी सूचना आर्य प्रतिनिधि सभा को दी, लेकिन हमें उसका अभी तक कोई भी सभा की तरफ से उत्तर नहीं मिला। सभा ने पं० रामस्वरूप जी शान्त को यहां इसकी जांच के लिये एक बार भेजा भी था, उन्होंने भी जांच के बाद सभा को रिपोर्ट भी लिख दी कि इसने मांस पकाया और खाया। फिर भी सभा ने इस मामले को ठप्प कर दिया। हमने सभा को भी बहुत पत्र लिखे कि आर्यसमाज का अन्तरंग सदस्य मांसाहारी रह सकता है या नहीं, हम इसका निर्णय चाहते हैं। सभा में बिल्कुल भी जान नहीं है। अब आपने ही सभा में जान डालनी है।

आचार्य जी आप जैसे महान् व्यक्तियों के होते हुए भी आर्यसमाज जैसी पवित्र संस्था का ऐसा हाल हो तो बहुत दुःख की बात है।

अब आप सभा को लिखकर भी पूछ सकते हैं कि आपने यह क्या अन्धेरगर्दी मचा रखी है। हमारी यह इच्छा है कि आप इसको बचाएं। आपको बुराइयों से घृणा है। आप एक आदर्श आर्य हैं। आप चरित्रवान् हैं। आर्यजगत् को आप पर विश्वास है। आप ही महर्षि दयानन्द के इस पवित्र नाम को बचा सकते हैं। इसलिये मैं आपको हाथ जोड़कर कहता हूं कि आप शीघ्र ही सभा को विवश करें कि इस प्यारेलाल को आर्यसमाज से निकाल देने का हुकम भेज दें। वरना इससे पहले कि मामला प्रेस में जाये हम अपना कर्त्तव्य समझते हैं कि हम सच्चे आर्य नेताओं के द्वार खटखटायें। प्रेस में जाने से आर्यसमाज की खिल्ली उड़ेगी, इसीलिये आपके चरणों में उपस्थित हुआ हूं। आशा है आप फौरन कार्यवाही करेंगे और मुझे भी सन्तोषजनक उत्तर देंगे। उत्तर की प्रतीक्षा में, धन्यवाद।

आपका आज्ञाकारी
सत्यप्रकाश आर्य सदस्य
आर्यसमाज रामां मण्डी, भटिण्डा

बामला भिवानी निवासी श्री पहलवान रूपचन्द जी रेसलिंगकोच सेना में रहते हुए भी इस आर्य और आचार्य भगवान्देव जी के श्रद्धालु भक्त रहे हैं। आचार्य जी को सेना में बुलाकर भाषण करवाने तता संग्रहालय हेतु अनेक प्रकार की वस्तुएं प्रदान करने में सदा प्रयत्नशील रहे हैं। अनेक पत्र आचार्य जी के पास आते रहते थे आचार्य जी भी नौरंगाबाद जाते-आत समय इनके घर बामला अवश्य जाते थे।

एन.आई.एस.

★ **भूतकाल की भूलों से सीखकर भविष्यत् सुखी बन सकता है।**

मोती बाग, पटियाला
१२-३-१९६६

श्रीमान् आदरणीय आचार्य जी नमस्ते।

.........२३ मार्च को रोहतक में कुश्ती है, ईरान से भारत की। आप विद्यार्थियों सहित जरूर जरूर दर्शन दें। आपकी सेवा में कुछ खास बातें रखनी हैं। मेरे पास लड़ाई के नैगेटिव हैं तथा कुछ फोटो भी हैं, वह भी आप रोहतक में ले लेना। २३ से २७ फरवरी तक राष्ट्रीय प्रतियोग्तिा में दोनों प्रकार की कुश्ती में सैनिक टीम विजयी रही। मेरे साथ प्रतापचन्द दीवान का जबरदस्त झगड़ा हुआ। झगड़े में चार घण्टे कुश्ती बंद रही। मुझे कुश्ती मैदान से हमेशा के लिए निकाल रहे थे। ज्यादा खिलाफत सरदार सुरजीत सिंह मजीठिया ने व दीवान प्रताप और बहुत से पिट्ठू थे। परन्तु हमारे तीन कर्नल आर्मी हैडक्वार्टर से आए हुए थे, उन्होंने मेरा पक्ष लिया। मैं अभी भी सेना टीम का कोच रखा गया हूं.....हमारा नहरी पानी वाला केस का नतीजा तो बहुत खराब रहा। अभी तक सुपरिन्टैंडेंट इंजीनियर रोहतक के यहां अपील की है। अगर यहां भी हम हार गये तो हमारा परिवार भूखा मर जायेगा। एक्स-ई.-एन ने बहुत बड़ी घूस तथा सिफारिश मानी है। मैं आपसे प्रार्थना करता हूं कि आप हमारी सहायता करें। आपका आज्ञाकारी

रूपचन्द

हरियाणा प्रान्त पृथक् बनने की प्रक्रिया चल रही थी, उस हरियाणा के हितैषी श्री ओम्प्रकाश भारद्वाज ने आचार्य भगवान्देव जी को पत्र लिखा। हिन्दी विभाग पटियाला

२०-७-१९६०

पूज्य आचार्य जी!

सादर अभिनन्दन!

......अभी अवसर आया है जब हमें अपने लिए सम्पत्ति-सम्पदा के विभाजन में सजग रहना चाहिये। यहां विभागीय स्तर पर पुस्तकों आदि के स्तर पर काफी गड़बड़ होने की सभावना है। यहां हिन्दी की पूरी भरी लायब्रेरी है लेकिन है वह महानिदेशक के अधीन जो दूसरा इरादा रखता है। ऐसी अन्य कई मूल्यवान् वस्तुं एवं हस्तलेख भी होंगे। आप दूरदर्शी हैं, स्वयं संभालने की व्यवस्था करें। पत्र मुझे मेरे घर के पतेपर लिखने का कष्ट करें।

पता- ६२-ई नई पुलिस लाइन्स कालोनी पटियाला

विनीत

ओम्प्रकाश भारद्वाज

यहां विभाजन के समय की एक अन्य घटना आचार्य जी बताया करते थे कि जब पाकिस्तान बना तो कुछ गान्धार कलाकृतियां भारतीय पंजाब में आ गई थी। जब हरियाणा अलग बना तो आचार्य जी ने चौ० देवीलाल जी से कहा कि पंजाब संग्रहालय से गान्धार कला की मूर्तियां हरियाणा में भी आनी चाहियें, तो चौ० देवीलाल जी ने आचार्य जी से कहा कि आचार्य जी! हरियाणा अलग बन गया यही काफी है, पत्थरों में से क्या निकालोगे। यदि चौ० देवीलाल जी आचार्य जी की बात मान जाते तो हरियाणा को भी गान्धार कला की बहुत मूर्तियां मिल जाती परन्तु वह समय चूक गया। [सम्पादक

★ **अपनी न्यूनताओं पर सदा दृष्टिपात करें, सामने वाला सदा ही गलत नहीं होता।**

जिहाद का एक नया रूप है 'लव जिहाद'। किसी हिन्दू युवती को मुसलमान युवक द्वारा अपना हिन्दू नाम बताकर प्यार के झूठे चंगुल में फंसाना। फिर उसका धर्म परिवर्तन करके निकाह करना। न माने तो बदनाम करने का भय, फिर भी न माने तो हत्या। पर हमारे नेता, समाज सुधारक, आरएसएस, विश्व हिन्दू परिषद् मौन है।

–सम्पादक

एक सार्वकालिक और सार्वजनिक समस्या

जिस समय लगभग पूरा टेलीविजन मीडिया सुशांत सिंह राजपूत को न्याय दिलाने के लिए मुंबई में जूझ रहा था, उसी समय दिल्ली की एक पत्रकार बिहार के बेगूसराय में एक पन्द्रह वर्षीय बच्ची के अपहरण पर जनता का ध्यान आकर्षित करने और पुलिस द्वारा मामले को समुचित कार्रवाई के लिए अथक प्रयास कर रही थी। इसके बावजूद जो बिहार पुलिस सुशांत सिंह मामले में डीजीपी स्तर तक उचित कारणों से उद्वेलित नजर आ रही थी, वही बेगूसराय प्रकरण में उदासीन बनी रही। करीब एक माह बाद इस महिला पत्रकार द्वारा राष्ट्रीय बाल अधिकार संरक्षण आयोग में गुहार लगाने के उपरांत जब आयोग ने कार्रवाई का नोटिस दिया, तब पुलिस हरकत में आई और आरोपी इज्मुल खान को गिरफ्तार किया। इसी बीच यूपी के सहारनपुर से भी इसी तरह का एक समाचार प्रकाश में आया। वहां भी एक हिन्दू युवती के परिजनों ने पड़ोसी शावेज पर उसके अपहरण का आरोप लगाया। बेगूसराय की तरह हो सकता है कि सहारनपुर मामले में नाबालिग की जान बच जाए, परन्तु यूपी के लखीमपुर खीरी में एक सत्रह वर्षीय दलित छात्रों की किस्मत अच्छी नहीं थी। निकाह के प्रस्ताव को ठुकराने पर दिलशाद नामक युवक ने उस छात्रा की नृशंस हत्या कर दी। ये तीन मामले कुछ दिनों कुछ दिनों की एक छोटी-सी तस्वीर है। नाबालिग हिन्दू युवतियों को चिहिन्त कर उनको अपहरण करने एवं उनसे जबरन निकाह करने के प्रयास का एक विकराल समस्या बन चुके हैं, जिसका समाधान तो दूर, उन पर चर्चा भी सार्वजनिक विमर्श से गायब है।

यह अत्यन्त क्षोभ का विषय है कि देश का राजनीतिक और सामाजिक नेतृत्व जब तक पाकिस्तान और अफगानिस्तान में हिन्दू युवतियों के अपहरण और उनसे जबरन निकाह को अंतर्राष्ट्रीय मंचों पर गंभीरता से उठाता है, लेकिन वह भारत में इसी तरह की समस्या पर पूरी तरह मौन बना हुआ है। यदि गौर से देखा जाये तो इस समस्या के काफी आयाम भारत में भी वही हैं, जो पाकिस्तान में हैं। जहां कानून १८ वर्ष से कम आयु को बालिकाओं से किसी भी वयस्क के संबंधों को स्पष्ट रूप से शारीरिक शोषण और उनके लोप को अपहरण मानता है, वहीं अपहरणकर्ता और इनके परिजन इन कुकर्मों का बचाव बड़ी बेशर्मी से प्रेम प्रसंग बता कर करते हैं। मस्जिदों से धर्म परिवर्तन के प्रमाण पत्र और काजी द्वारा निकाहनामे भी तुरत फुरत करा लिये जाते हैं। ये प्रमाण पत्र अक्सर पुरानी तारीखों में बनाए जाते हैं। इस तरह के प्रपत्रों पर नाबालिग अपहृतों की आयु १८ वर्ष से ऊपर दर्ज की जाती है। जाहिर है इस प्रकार मानवीयता को शर्मसार कर और कानून के भय को ताक पर रख

★ भलाई करते रहिये बहते पानी की तरह। बुराई खुद ही किनारे लग जायेगी कचरे की तरह।

अपहरणकर्ताओं के समर्थन में मजहबी लामबंदी उस मानसिकता को दर्शाती है, जिसमें कहीं १४-१५ साल, तो कहीं तरुण अवस्था को ही विवाह योग्य आयु मान लिया जाता है।

हालांकि हर प्रकार का बालशोषण समाज में उद्वेलना का विषय है, किन्तु मजहबी उद्देश्य से बच्चियों को लक्ष्य बनाना एक व्यवहार जनित विकृति है। इस विकृति का प्रदर्शन भी नियमित रूप से देखने को मिलता रहता है। दो वर्ष पूर्व गाजियाबाद में एक ११ वषीय बच्चे के अपहरण और उसके साथ दुष्कर्म की घटना ने सनसनी फैला दी थी। अपहरणकर्ता सत्रह साल का युवक था, जिसे एक मौलवी ने मदरसे में पनाह दी थी। सोशल मीडिया पर इस संगीन मामले को भी प्रेम प्रसंग बताने की भरसक कोशिश हुई। इस मध्ययुगीन घृणित सोच को और अधिक बल देश की भ्रष्ट और अकर्मण्य व्यवस्था से मिल रहा है। ऐसे पीड़ित परिवारों को न्याय दिलाने के लिये संघर्षरत अग्निवीर संस्था के संजीव नैयर का कहना है कि अधिकांश मामलों में पुलिस का रुख उदासान या कभी कभी प्रतिकूल भी होता है। पीड़ितों के अवयस्क होने के बावजूद न तो आरोपियों पर प्रौक्सी एक्ट लगाया जाता है और न ही दुष्कर्म की धाराएं तामील होती हैं। कई मामलों में सांप्रदायिक वैमनस्य फैलने का खतरा बताकर आरोपियों के नाम भी प्रथम सूचना रिपोर्ट में दर्ज नहीं किए जाते। दिल्ली के सुलतानपुरी इलाके में एक १४ वर्ष की बच्ची के अपरहणकर्ता सद्दाम अंसारी का नाम पुलिस ने बार बार कह कर एफआईआर में दर्ज करने से मना कर दिया कि इससे मामला सांप्रदायिक हो जायेगा। यही रवैया मीडिया के एक हिस्से का भी है। बड़ी संख्या में पीड़ित किशोरियों की उदलित पहचान होने के बावजूद ससीएसटी एक्ट की धाराएं भी जब तक नहीं लगाई जाती, जब तक अनुसूचित जाति एवं जनजाति आयोग विषय का संज्ञान न ले ले। अपहृत किशोरियों के शरीरिक शोषण और जान को खतरा होने के बावजूद पुलिसिया कारवाई में कोई तीव्रता नहीं दिखती है।

नाबालिग हिंदू बच्चियों पर हो रहे इस मजहबी आघात में जहां पुलिस का भी रूप एक कारण है, वहीं कानूनी खामियां इन गंभीर अपराधों में सहभागी काजी और मौलवियों पर कार्रवाई की गुंजाइश को भी सीमित कर देती हैं। दरअसल किसी भी कानून के अभाव में जबरिया या धोखे से किए गए धर्म परिवर्तन में राज्यों द्वारा बनाए गए कानूनों का ही सहारा रह जाता है, परन्तु विडंबना यह है कि मात्र आठ राज्यों में ही इस आशय के कानून बने हुए हैं। इन प्रावधानों के तहत आज तक पूरे भारत में कभी किसी आरोपी का सजा नहीं हुई है। इसी प्रकार समान नागरिक संहिता का अभाव दूसरी बड़ी अड़चन है। इसी के फलस्वरूप मतांध काजियों को फर्जी निकाहनामे बनाने का अवसर मिलता है।

हालांकि उत्तरप्रदेश की योगी सरकार इस प्रकार के मामलों में कार्रवाई के लिये एक एक्शन प्लान बना रही है, परन्तु समस्या के अंतरराज्यीय पहलुओं के चलते जब तक उपरोक्त कानूनों बाधाओं को पाटकर एक विशिष्ट केंद्रीय जांच एजेंसी का गठन नहीं होगा, तब तक इस लड़ाई में सफलता आंशिक ही रहेगी।

-विकास सारस्वत

लेखक इंडिक अकादमी के सदस्य एवं स्तंभकार हैं

★ असम्भव शब्द का प्रयोग भीरू लोग करते हैं।

अपनी अतीत की भूलों के भयानक नतीजे

-आर विक्रम सिंह

१९६२ के बाद लद्दाख की पहाड़ियों पर युद्ध के बादल एक बार फिर घुमड़ने लगे हैं। इसका एक कारण तो अहंकारी चीन की विस्तारवादी प्रवृति है और दूसरा आजादी के बाद हमारे नेतृत्व की भयानक भूलें। तिब्बत को स्वायत्तशासी बफर राज्य बनाए रखना ब्रिटिश शासन की नीति थी और उसी दृष्टि से उसने १९१४ का त्रिपक्षीय सीमा समझौता किया था, जिसे मैकमोहन लाइन के नाम से जाना गया, लेकिन नेहरू ने चीन के प्रति नीति बदल दी। चीन में अक्टूबर १९४९ में माओ सत्ता में आ गए और १९५० में चीनी सेना कोरिया में अमेरिका के विरुद्ध युद्ध में कूद पड़ी। इसके साथ ही चीन ने तिब्बत पर नियंत्रण के लिये सेनाएं रवाना कर दी। वे सेनाएं हमारे अक्साई चिन के एक पुराने अविकसित मार्ग से होते हुए तिब्बत पहुंची। चीनी आक्रमण के जिस मार्ग को विश्व ने जाना, उसे हमने न जानने का नाटक किया। ब्रिगेडियर दलवी अपनी पुस्तक हिमालयन ब्लंडर में लिखते हैं, अक्टूबर १९५० की बात है। एक दिन अचानक जनरल लेटेन उद्विग्न होकर लेक्चर हाल में आए और कहा तुम्हारे नेताओं की अकर्मण्यता के कारण चीन ने भारत के उत्तर में आज एक बड़ा दरवाजा खोल लिया है। तुम्हारी मुश्किलें कितनी बढ जायेंगी इसका तुम्हें अंदाजा ही नहीं है।

यह मानना कि भारत सरकार को अक्साई चिन में बन रही सड़क की जानकारी नहीं थी, स्वीकार्य नहीं। सीमा क्षेत्रों के हालात की इंटेलीजेंस रिपोर्ट सामान्यत: प्रधानमंत्री को प्रेषित होती है।अक्साई चिन में बन रही सडक की फोटो और रिपोर्ट नेहरू को प्रस्तुत न की गई हो यह असभंव है, लेकिन नेहरू के लिये अक्साई चिन ऐसा पथरीला इलाका था जहां घास का तिनका तक नहीं उगता। तब चीन कोरिया युद्ध में फंसा था। उस समय उसे भारत की ओर से अक्साई चिन छोड़ देने की एक चेतावनी भी पर्याप्त होती। हमारी एयरफोर्स इतनी सक्षम तो थी ही कि चीन को सडक का काम रोकना पड़ता, पर वह सड़क बनने दी गई, क्योंकि नेहरू चीन को साथ लेकर एशिया फॉर एशियंस अर्थात् एशिया एशियावालों के लिये जैसा दिवास्वप्न देख रहे थे। इस दिवस्वप्न के चलते चीन का तुष्टीकरण हमारी नीति बन गई। १९५७ में उस सड़क का उद्घाटन हुआ। विश्व भर में समाचार फैला, तो हमारे नेतृत्व ने भी चकित होने का ड्रामा किया। हमारे नेतृत्व द्वारा तिब्बत को स्वायत्तशासी राज्य के स्थान पर चीन के आधिपत्य का प्रदेश मानने का परिणाम यह हुआ कि तिब्बत से भारत के जो भी परंपरागत सीमा,व्यापार, सांस्कृतिक समझौते हुए थे, वे सब अर्थहीन हो गए। यदि तिब्बत चीन का प्रदेश था तो एक प्रदेश को तो दूसरे देश से समझौतों का अधिकार ही नहीं होता। वास्तव में हमारे ढुलमुल के कारण चीन के लिए मैकमोहन लाइन और लद्दाख की परंपरागत सीमा रेखाओं को अस्वीकार करना आसान हो गया। इस तरह जो भारत तिब्बत सीमा थी, वह भारत चीन सीमा हो गई। फिर पंचशील जैसा आदर्शवादी समझौता का तिब्बत में जो भी हमारे अधिकार थे, वेसब छोड़ दिए गए। तिब्बत की प्रताड़ना प्रारंभ हो गई। एक

★ बुद्धिमान् व्यक्ति अपना मार्ग स्चयं खोज लेता है।

अध्ययन के अनुसार शांतिपूर्ण तिब्बती भिक्षुओं और लामाओं सहित करीब एक लाख आठ हजार तिब्बती मारे गये। छह हजार मोनेस्ट्री ध्वस्त की गई। आचार्य कृपलानी ने १९५४ के पंचशील समझौते पर कहा था कि यह समझौता एक प्राचीन राष्ट्र के विनाश पर हमारी सहमति के पाप से उत्पन्न हुआ।

१९६२ का युद्ध २० अक्टूबर को प्रारंभ होता है। इसके पहले तीन अक्टूबर को चीन से थामा रिज खाली कराने के मुद्दे पर जनरल थापर से नेहरू कहते हैं कि हमारी इस कार्रवाई पर चीन कोई प्रतिक्रिया नहीं करेगा। १२ अक्टूबर को उनका बयान यह था कि सेनाएं चीनियों से अपना इलाका खाली कराएंगी। वह मानते रहे कि चीन बड़ी प्रतिक्रिया नहीं करेगा। उस समय शीतयुद के चलते दुनिया दो खेमों में बंट रही थी,, पर हम सपनों में थे। ऐसे हालात के बावजूद नेहरू राष्ट्रीय सुरक्षा को हाशिये पर छोड़ विश्व शांति की मृग मरीचिका के पीछे दौड़ रहे थे। विश्व युद्ध में बर्बाद हो गए देश जापान, जर्मनी, फ्रासं प्राणपण से विकास में लगे थे और इस आदर्शवादी गुटनिरपेक्ष नीति को लेकर मुग्ध थे। १९६२ की पराजय के बाद हम अकेले पड़ गए। हमारी ओर से एक भी देश नहीं बोला। गुटनिरपेक्षता की असलियत सामने आ गई। दलाई लामा अपनी पुस्तक फ्रीडम इन एक्जाइल में लिखते हैं, १९९६२ के बाद नेहरू ने उनके समक्ष स्वीकार किया था कि हम मूर्खों की दुनिया में रह रहे थे। दरअसल समाधान की सोच का अभाव एक बड़ी समस्या थी। अहिंसक विचारधारा समस्याओं का समाधान तुष्टीकरण और विभाजन में देखती है। तिब्बत समस्या चीन की तुष्टीकरण का परिणाम थी। समाधान तो यह था कि अमेरिका, ब्रिटेन के साथ संयुक्त रूप से तिब्बत को स्वतंत्र देश स्वीकार कर सैन्य सहायता दी जाती। कोरियन युद्ध में व्यस्त चीन के लिये बहुत कुछ कर पाना संभव न होता। तिब्बत के लिये भी कोरिया की तरह शांति सेनाएं भेजी जा सकती थी, लेकिन इसमें सबसे बड़ी बाधा हम थे। स्पष्ट सैन्य समाधान के विकल्प के बावजूद कश्मीर विवाद को अनिस्तारित रखकर हमने स्वयं दो मोर्चे बना लिए थे। चाहे कश्मीर समस्या हो या चीन-तिब्बत की समस्या, यह नेहरू की नीतिगत पक्षाघात का परिणाम है। चीन से उत्तरी सीमा पर युद्ध की स्थितियां ही न बनती, यदि पूर्व की ब्रिटिश शासन की तिब्बत संबंधी नीतियों और शीत युद्ध के दौर की जमीनी सत्ता शक्ति के समीकरणों को संतुलित करते हुए राष्ट्रहित के लक्ष्य को प्राथमिकता दी गई होती। ऐसा न करने के घातक परिणाम हुए, पर यह १९६२ नहीं है। गलवन के बलिदान से नया अवतार हो चुकी भारतीय सेना द्वारा २९-३० अगस्त की रात लद्दाख में कई चोटियों पर कब्जा कर क्षेत्रीय वर्चस्व कायम करना चीन के लिए अकल्पनीय है। चीन सीमा पर ५० हजार सेनाएं, मिसाइलें, राकेट, टैंक बढा रहा है। चीनी प्रत्याक्रमण पर भारतीय प्रतिक्रया चुशूल सेक्टर में स्थानीय युद्ध में बदल सकती है। युद्ध की आशंका के बाद भी संतोष की बात यह है कि भारत अब नेहरू वाला भारत नहीं है।

विक्रम सिंह पूर्व सेनाधिकारी तथा बाद में आइएएस रहे है। उन्हें अपने राष्ट्र की वर्तमान समस्याओं के पीछे के कारणों तथा अपनी प्राचीन संस्कृति की अच्छी जानकारी है। समय-समय पर दैनिक जागरण में राष्ट्रहित विषयों पर लिखते रहते हैं।

★ परमात्मा सभी को एक ही मिट्टी से बनाता है, अन्तर केवल इतना होता है कि कोई बाहर से सुन्दर होता है, कोई भीतर से।

मां की पुकार

-महन्त चन्द्रनाथ

नवम्बर २०२० से आगे

।। तीन दर्जे ।।

अमर शहीद सरदार भगत सिंह आदि की मंडली का यह कहना था कि जेल के अन्दर किसी भी तरीके में विश्वास रखने वाले राजनैतिक कैदियों के साथ चोर डाकुओं जैसा व्यवहार नहीं होना चाहिये। और सरकार से अपना यह दावा पूरा कराने के लिये उन्होंने यह दृढ प्रतिज्ञा कर ली थी कि जब तक सरकार हमारी उचित मांग के सामने झुक न जायेगी तब तक हम लोग कुछ भी खाना पीना न करेंगे। सचमुच यह प्रतिज्ञा बहुत बड़ी भीषण थी पर थी किनकी? बाजारू जुवरियों की अथवा चन्डूखाने के नमर्दों की नहीं, मातृभूमि के लिये सर्वस्व न्यौछावर करने वाले तथा नौजवान भारत के हृदय में निवास करने वाले सुपूतों की थी। अतएव उन वीरों ने एक एंक बून्द घुलकर संसार को दिखा दिया कि आजादी के दिवानों की प्रतिज्ञा कभी झूठी नहीं होती।

लगभग दो महीने बीत गये, वे मरने के नजदीक पहुँच गये तो सारे देश में हलचल मच गई। थी देशभक्तों के हृदय निराश हुए कह रहे थे-देखिये क्या होता है?-अचानक एक दिन वज्रपात हो गया। इकसठवें दिन हृदय विदीर्ण करने वाला समाचार मिला कि यतीन्द्रनाथ की लाश तूफान मेल में लाहौर से कलकत्ते पहुँचाई गई। लाखों भारतीयों के हृदय पहले ही घबराये हुए थे, यह सुनते ही चीख उठे गजब की चोट थी। सारे भारत में शोक सभायें हुईं, मातम मनाने के लिये सरकारी दफ्तरों में काम करने वाले क्लर्कों तक ने काम बन्द रक्खा। अपनी लाचारी, बेबसी और असहाय अवस्था पर खून के आंसू बहाये गये। सरकार की निन्दा के प्रस्ताव पास किये गये। नौजवानों की तरफ से बदला लेने के लिये धमकी के लाल पर्चे चिपकाये गये। तब जाकर कहीं भारतीय नेताओं और सरकार के कानों पर जूं रेंगी। वे एक दूसरे के पास भागे फिरने लगे। पर खूब दौड़ धूप और तू तू मैं मैं के बाद इस ऐतिहासिक अमूल्य कुर्बानी के बदले में क्या मिला। इस पर स्वाधीन भारत का इतिहास लेखक खून के आंसू बहाये बिना न रहेगा।

भारतीय नताओं ने सरकार से कुछ नाममात्र के सुभीतों का आश्वासन पाकर वीरों की भूख हड़ताल बन्द करा दी। इतने से ही सन्तोष कर लिया कि चलो इस वक्त भगत सिंह, बटुकेश्वरदत्त और राजेन्द्र लाहिड़ी ये तीन तो बच गये। सच है गुलामों की तबीयत ही कुछ ऐसी हो जाती है कि वे मेहनत से पौनी मजदूरी मिलने पर भी खुश हो जाया करते हैं।

खैर, हालत कुछ ऐसी हो चली थी कि सरकार के लिये भी अब कुछ न कुछ किये बिना चारा नहीं था। उसने कैदियों के ए.बी.सी.

★ सफलता के लिए अन्तिम क्षण तक प्रयत्न करना चाहिये, इससे या तो लक्ष्य प्राप्त होगा अन्यथ अनुभव तो मिलेगा ही।

यानि पहला दूसरा तीसरा ये तीन दर्जे तो किये पर राजनैतिक कैदियों की विशेषताओं को उड़ा दिया। यतीन्द्रनाथ की कुर्बानी इस उद्देश्य से हुई थी कि सामाजिक अपराध करने वाले चोर डाकुओं से हमारी विशेषता स्वीकार कर हमारे साथ सम्मान का व्यवहार किया जाये, पर यही उद्देश्य पूरा नहीं हुआ। दर्जों की रचना इस प्रकार से की गई जिसमें चोर डाकू तो सत्कार पाने लगे और राजनैतिक कैदी उसी अपमान के गढे में गिरे रहे। फर्ज कीजिये- एक सामाजिक अपराधी अथवा कातिल आदमी है, पर है सरमायदार, इतना संगीन जुर्म करने पर भी वह तो ए-क्लास यानी पहले दर्जे के सुभीते भोगेगा लेकिन एक कांग्रेस के अहिंसात्मक सिद्धान्त का प्रचार करने वाला कैदी मामूली राजनैतिक अपराध करने पर भी अपनी गरीबी के कारण तीसरे दर्जे सी क्लास में पड़ा सड़ता रहेगा। यह सभ्यता की डींग मारने वाली सरकार की नीयत को प्रकट करने वाला वाका है। हैसियत के आधार पर दर्ज बांटने का यह सिद्धान्त बड़ा ही अनर्थकारी और अन्याय सूचक है। इससे तो अशिष्टों को सम्मानित और शिष्टों को अपमानित करने की कुटिल चाल चली गई है।

रुड़की छावनी के एक मुसलमान सूबेदार को किसी लड़के के साथ मुंह काला करने के अपराध में सजा हुई थी, वह तो बी क्लास में होने के कारण रोजमर्रा मांस की हंडिया चढाता था, लेकिन राजनैतिक अपराधी होने के कारण एक अच्छे जमींदार होने पर भी अम्हटे के मौलाना इकरामुलकहक अपने पूरे दो मन पक्के वजन वाले लम्बे चौड़े शरीर को सिर्फ चौदह छटांक रोटी पर जिन्दा रखते थे। कितना अन्तर है? भला कौन इन्साफ पसन्द इन्सान इस बेढंगे ढंग की ताईद करेगा और फिर यह भी कोई अटल सिद्धान्त नहीं कि जिसकी जैसी हैसियत हो उसे वैसी ही क्लास मिले। कांग्रेसियों में अक्सर इस भेद नीति से काम लिया या कि दो एक जैसी हैसियत रखने वालों में से एक को कोई क्लास और दूसरे को कोई क्लास दी गई। बल्कि कभी-कभी तो अधिक हैसियत वाले को नीची और थोड़ी वाले को ऊंची क्लास दी गई, जिससे कि इन में फूट पड़ जाय और आपस में स्पर्धा बढे। यद्यपि सरकार की इस कुटिल चाल ने अपना कुछ रंग दिखलाया पर वह रंग बहुत देर तक न ठहर सका। सच है जो देश एक बार जाग उठता है और आजादी या मौत का मन्त्र जपना शुरू कर देता है उसे छोटी-छोटी बातों में फंसा कर ठंडा करने की इच्छा रखना पागलपन है। सौभाग्य की बात है जो महानुभाव पहले पहल जेल में पहुंचे थे वे क्लासों की महाम से नफरत करते थे। अतएव जब स्थानीय लोगों के शोर मचाने पर कलस्टर साहब दर्जे बांटने के लिये हैसियत की जांच करने जेल में आये तो उन्हें टका सा जवाब दे दिया गया। यह भी

★ सत्य कहने में कभी भयभीत नहीं होना चाहिये, चाहे इसके कारण कष्ट ही प्राप्त हो।

ठीक है जिस आदमी ने हम को सजा दी थी उसके सामने अपनी हैसियत के पुल बांधकर क्लास मांगने के माने थे उससे कुछ अच्छा टुकड़ा मांगना, जिससे वह अपने मन-मन में खुश होता और मुस्कराता हुआ कहता क्यों? देखी हमारी जेल? अगर यह खाना नहीं खाया जाता तो यों ही हमारे साथ लड़ाई क्यों करते थे? हम लोग दुश्मन को इस प्रकार खुश होने का मौका नहीं देना चाहते थे और सोई हुआ।

इधर जिन महानुभावों को अनायास की क्लास मिल गई थी।

क्रमशः

शोक सन्देश

गुरुकुल झज्जर के स्नातक श्री स्वामी सोमानन्द जी (पूर्वनाम सत्यपाल उपाध्याय हुमायूंपुर) का निधन १० नवम्बर २०२० को चण्डीगढ हस्पताल में हो गया। उनको निमोनिया हो गया था। वे लगभग ८० वर्ष के थे। गुरुकुल झज्जर के अध्यापक और ब्रह्मचारियों के द्वारा उनकी अन्त्येष्टि क्रिया ग्राम हुमायूंपुर में १२ नवम्बर को की गई।

गुरुकुल की ओर से दिवंगत आत्मा की सद्गति हेतु परिवार को इस दारुण कष्ट को सहन करने की ईश्वर से प्रार्थना की गई।

-सम्पादक सुधारक

हमारे कर्त्तव्य

-स्वमी श्रद्धानन्द

यज्ञदानतपः कर्म न त्याज्यं कार्यमेव तत्।
यज्ञो दानं तपश्चैव पावनानि मनीषिणाम्।।
एतान्यपि तु कर्माणि संगं त्यक्त्वा फलानि च।
कर्तव्यानीति मे पार्थ! निश्तिं मतमुत्तमम्।।

-गीता अ० १८ । श्लो ०५, ६।

शब्दार्थ- (**यज्ञदानतपः**) मनुष्य के लिये यज्ञ, दान और तप (**कर्म**) यह तीन कर्त्तव्य हैं। (**न त्याज्यम्**) यह कर्त्तव्य मनुष्य कभी न छोड़े, (**कार्य्मेव तत्**) इन्हें अवश्य करता ही रहे क्योंकि (**यज्ञो दानं तपश्चैव**) यज्ञ, दान और तप यह तीनों (**मनीषिणाम्**) बुद्धिमान् मनुष्यों के (**पावनानि**) हृदयों को शुद्ध पवित्र करने वाले हैं। अतएव (**पार्थ!**) हे अर्जुन! (**एतान्यपि तु कर्माणि**) यह सब कर्म (**संगं फलानि च त्यक्त्वा**) आसक्ति तथा फल त्याग की भावना से (**कर्तव्यानि**) करने चाहिएं, यह (**उत्तमं मतं निश्चितम्**) मेरा उत्तम निश्चित मत है।

कर्मों के नाश से मुक्ति होती है। जब तक कर्म का बन्धन नहीं छूटता तब तक मनुष्य शरीररूपी कारागार में बंद रहता है। इसलिये मुक्ति की इच्छा रखने वालों के लिये आवश्यक है कि वे कर्मों का अन्त कर दें। क्या इसका अभिप्राय यह है कि कर्म करे ही नहीं? नहीं, मैने एक बार एक दृश्य देखा जो कभी भूलता

★ आयु की अपेक्षा परिस्थितियों का सामना करने से अनुभव की प्राति होती है।

नहीं। एक साधु महात्मा मेरे स्थान के समीप आकर ठहरे। उनका नाम ही जनता ने "निष्काम" रख लिया था। वह नग्न रहते थे। मैंने भी बड़ी प्रशंसा सुनी, दर्शनों के लिये उपस्थित हुआ न बोलते थे, न कुछ करते थे। कुएं पर चौकड़ी मारे बैठे थे। उनके स्थूल शरीर को चार आदमी मल मल कर धो रहे थे। उन्हीं में से एक भक्त ने बदन अंगोछा दिया, उठाया उठ खड़े हुए, हिलाया हिल पड़े परन्तु गद्दी पर पहुंचते ही बैठ गये। मैं भी प्रणाम करके बैठ गया। गले में सुगन्धित फूलों की माला डाली गई। साधु जी ने मौन साधन किया हुआ था और भक्त जन प्रशंसा के पुल बांध रहे थे। इतने में एक देवी आई और उसने मुंह के पास कलाकन्द (मिठाई) रक्खी। महात्मा जी ने मुंह खोल दिया। जब कलाकन्द मुंह के अन्दर गया तो खाने लगे। तब मुझ से न रहा गया और मैंने कहा, 'महात्मा जी! अगर आप मुंह न खोलते और मिठाई को दांतों से न चबाते तब मैं इन मनुष्यों के कहने पर आपको निष्काम समझता।' महात्मा जी की आंखें सुरख लाल हो गई और मौन व्रत टूट गया। मैं बाहर चला आया। लोगों ने आकर मुझ से कहा, वह साधु सदाचारी तो है। मैंने जवाब दिया कि यदि सदाचारी है तो यह इसका कर्तव्य है। परन्तु जो मनुष्य क्रोध को वश में नहीं कर सकता, उससे हमें क्या लाभ हो सकता है। जैसा कि कहा गया था कि उसने 'निष्काम' शब्द के अर्थ नहीं समढे। कर्म कौन मनुष्य छोड़ सकता है। क्या आंख से देखना बन्द हो सकता है। कान को सुनने से रोका जा सकता है। कोई भी इन्द्रिय अपने काम को नहीं छोड़ती तब क्या करना चाहिए।

कृष्ण भगवान् कहते हैं-यज्ञ, दान और तप इन कर्मों का कभी त्याग न करना चाहिये। छोड़ने योग्य बुरे काम हैं न कि अच्छे। वैदिक कर्म को न छोड़े परन्तु इन कर्मों को नियमपूर्वक करना मनुष्य का परम धर्म है। यह क्यों। इसलिए कि मनुष्य एक स्थान पर नहीं ठहर सकता। गति होना जगत् का नियम है। सिवाय परमात्मा के और किसी सांसारिक पदार्थ की स्थिति नहीं, फिर निर्बल मनुष्य कब एक स्थान पर ठहर सकता है। मुक्ति बड़ी दूर है। आत्मिक हिमालय की चोटी पर उसकी झलक दिखती है। मुक्ति के अभिलाषियों को ऊपर चलना है। मार्ग बड़ा विकट है, चढ़ाई बड़ी सीधी है। अगर दृढता के साथ श्वास को ठीक कर, बदन को ठीक अवस्था में रखकर, ऊपर को नहीं चले तो एकदम नीचे गिर पड़ोगे। नीचे की दूरी से सिर में चक्कर आ जायें और न जाने किस प्रकार नीचे आन गिरें। इसलिये कृष्णदेव कहते हैं कि आत्मा की शुद्धि और दृढता के लिये, यज्ञ, दान और तप का अभ्यास नित करें। बिना तप के मनुष्य दान के योग्य नहीं होता। जिसके पास स्वयं धन नहीं, वह दूसरों को क्या देगा? जिसके अपने पास

★ बिना व्यायाम के स्वास्थ्य की रक्षा करना असम्भव है।

विद्यारूपी रत्न नहीं, वह दूसरों को विद्यादान कैसे कर सकता है। इसलिये तप का अभ्यास सबसे पहले करना चाहिये, उसके साथ दान का अभ्यास स्वयमेव होगा। जिसके पास ऐश्वर्य है, उसका चित्त देने की तरफ प्रवृत्त होगा। जिसके शरीर में बल नहीं, वह दीनों की रक्षा क्या करेगा? जब, तप और दान दोनों इकट्ठे हो जाते हैं तब यज्ञ का प्रकाश होता है।

क्या कभी भी हम मुक्ति की चोटी पर पहुंच सकेंगे। इसका उत्तर फिर ईश्वरीय विज्ञान की सहायता से भगवान् कृष्ण देते हैं-कर्म बराबर करो, क्योंकि इन्द्रियां बिना कर्मों के रह नहीं सकती, किन्तु उन कर्मों के फल भोग की इच्छा को छोड़ दो। बस यही निष्काम कर्म कहलाते हैं। कर्म करते हुए ही पूरी आयु भोगने की इच्छा करो, परन्तु उन कर्मों के फल से कुछ भी सम्बन्ध न रखो। इस तरह तुम उन कर्मों कं बन्धन से छूट सकते हो। कर्म अपने आप में कुछ भी नहीं कर सकते, उनमें फंसावट ही सब कुछ करती है। मनुष्यों को यदि पाप रूप नर्क में गिराती है तो कर्मों की फंसावट। इसलिये ऐ मेरे प्यारे भाइयो, संसार के गृहस्थरूपी युद्ध से मत भागो। जिसने इन्द्रियों को वश में किया है, उसका घर तपोवन है किन्तु जो वन में जाकर भी इन्द्रियों का दास ही रहा, वह घोर संग्राम में फंसा हुआ है। ब्राह्मण निष्काम कर्म करने से ही जगद्गुरु कहलाते थे अन्यथा उनके शरीर भी दूसरे मनुष्यों की तरह के ही थे। इस समय निष्काम भाव से काम करने की बड़ी भारी आवश्यकता है। तुम यश के भूखे हो। निष्काम भाव से काम करो, यश तुम्हारे पीछे मारा मारा फिरेगा। तुम्हें आश्चर्य होगा कि यश का निष्काम भाव से क्या सम्बन्ध। परन्तु आश्चर्य की कोई बात नहीं है। कवि ने सच कहा है, 'बिन मांगें मोती मिले, मांगे मिले न भीख।'

तुम अपना उद्देश्य उच्च बनाओ, उसके लिये तप, दान और यज्ञ के अभ्यास की आवश्यकता है। इन तीनों प्रकार के कर्मों से शरीर, मन और आत्मा को शुद्ध करो। फिर निडर होकर संसार में विचरो। जब फल भोग की कामना न रही तो बजाय इसके कि विषय इन्द्रियों को अपनी तरफ खींच सके, मन इन्द्रियों को अन्दर की तरफ खींच सके और बजाय इसके कि मन आत्मा को बहिर्मुख कर सके, आत्मा अपने अन्दर मन और इन्द्रियों को खींच कर उनक राजा बना हुआ, परम धाम की तरफ चल सकेगा। उस परम धाम का मालिक परम आत्मा है। उसी का सारा ऐश्वर्य है। उसको पाकर फिर किसी वस्तु की इच्छा बाकी नहीं रहती। परमात्मा पूर्ण कृपा करें कि हम सब योगीराज कृष्ण के गम्भीर नाद को सुनें और उसके अनुकूल चलें।

★ व्यायाम करना अनेक रोगों की औषधि है।

सदा उत्साहित रहने के उपाय

-स्वामी देवव्रत सरस्वती

किसी कार्य को करने का जोश, उमंग, हौंसला उत्साह कहलाता है। लक्ष्मी ऐसे पुरुष का ही वरण करती है।

उत्साह सम्पन्नमदीर्घ सूत्रं क्रिया विविज्ञं
व्यसनेसष्वसक्तम्।
शूरं कृतज्ञं दूढसौहृदंच लक्ष्मी स्वयं
याति निवासहेतोः।।

जो सदा उत्साहित रहता है, कार्य को लटकाता नहीं है, कार्य करने की विधि को जानता है, जिसमें किसी प्रकार का दुर्व्यसन नहीं है, शूरवीर, किये हुये उपकार को मानने और जिसकी मित्रता दृढ़ है ऐसे पुरुष के यहां लक्ष्मी स्वयं निवास करने के लिये आती है। उत्साहित रहने के लिये निम्न सूत्र उपयोगी हैं।

१.किसी भी परिस्थिति को हंसते हुये स्वीकार करना। जीवन में सुख-दुःख, विघ्न बाधायें आती ही रहती हैं। जिन्हें देखकर कुछ अच्छे कार्य को प्रारम्भ ही नहीं करते परन्तु जो शूरवीर हैं वे जिस कार्य को प्रारम्भ कर देते हैं उसे पूरा करके ही दम लेते हैं।

वह पथ क्या पथिक कुशलता क्या
जिसमें बिखरे हुये शूल न हों।
नाविक की धैर्य परीक्षा क्या
जब धारा ही प्रतिकूल न हों।

प्रसन्नता पूर्वक कार्य करने वालों की कठिनाइयां अपने आप सुलझती है। अंग्रेजी में कहवतहै-well begin is half done

२. आशावादी दृष्टिकोण रखना-

नर हो न निराश करो मन को
काम करो कुछ काम करो
धैर्य न टूटे पड़े चोट सौ घन की,
यही अवस्था होनी चाहिये निज मन की।

कांच का गिलास आधा पानी से भरा हुआ है। निराशावादी उसे आधा खाली और आशावादी आधा भरा हुआ बतायेगा। एक परिवार में एक युवक, उसकी बहिन और माता तीन व्यक्ति थे। युवक निराशावादी था। उसने कहा माँ हम तीन ही हैं। माँ ने कहा अरे पगले। तेरी शादी होने पर बहू घर में आयेगी तो चार हो जायेंगे चिन्ता क्यों करता है। युवक ने कुछ विचार कर कहा फिर मेरी बहिन की शादी हो जायेगी और हम तीन ही रह जायेंगे। माँ ने आश्वासन देते हुए कहा-तेरे पुत्र भी तो होगा, निराशावादी पुत्र ने कहा-माँ फिर तुम्हारे जाने का समय हो जायेगा। ऐसे निराशावादी यवुक को कौन समझा सकता है।

३. समाज में कुछ व्यक्ति ऐसे भी मिलेंगे जिन्होंने अपने पुरुषार्थ से प्रतिष्ठित स्थान प्राप्त किया है। जिस व्यक्ति के कार्य से आप प्रभावित है उसी को अपना आदर्श मान कार्य में जुट जायें। महापुरुषों का जीवन चरित्र पढ़ें।

लहरों से डरकर नौका पार नहीं होती।
कोशिश करने वालों की कभी हार नहीं होती।

क्रमशः

★ सच्ची भूख लगने पर ही भोजन करना चाहिये।

हमारी विशिष्ट औषधियाँ

संजीवनी तैल

यह तैल घाव के भरने में जादू का काम करता है। भयंकर फोड़े-फुन्सी, गले-सड़े पुराने जख्मों तथा आग से जले हुए घावों की अचूक दवा है। कोई दर्द या जलन किये बिना थोड़े समय में सभी प्रकार के घावों को भरकर ठीक कर देता है। खून का बहना तो लगाते ही बन्द हो जाता है। चोट की भयंकर पीड़ा को तुरन्त शान्त कर देता है। दिनों का काम घण्टों में और घण्टों का काम मिनटों में पूरा कर देता है।

मूल्य : 100 रुपये

च्यवनप्राश

शास्त्रोक्त विधि से तैयार किया हुआ स्वादिष्ट सुमधुर और दिव्य रसायन (टॉनिक) है। इसका सेवन प्रत्येक ऋतु में स्त्री, पुरुष, बालक व बूढ़े सबके लिए अत्यन्त लाभदायक है। पुरानी खांसी, जुकाम, नजला, गले का बैठना, दमा, तपेदिक तथा सभी हृदयरोगों की उत्तम औषध है। स्वप्नदोष, प्रमेह, धातुक्षीणता तथा सब प्रकार की निर्बलता और बुढ़ापे को इसका निरन्तर सेवन समूल नष्ट करता है। निर्बल को बलवान् और बूढ़े को जवान बनाने की अद्वितीय औषध है। च्यवन ऋषि इसी रसायन के सेवन से जवान होगये थे।

मूल्य : 1 किलो 275 रुपये

नेत्रज्योति सुर्मा

सुर्मे तो बाजार में पर्याप्त मात्रा में मिल जाते हैं परन्तु इतना लाभप्रद और सस्ता सुर्मा मिलना कठिन है। इसके लगाने से आंखों के सब रोग जैसे आंखों से पानी बहना, खुजली, लाली, जाला, फोला, नजर की कमजोरी आदि विकार दूर होते हैं तथा बुढ़ापे तक आंखों की रक्षा करता है। दुखती आंखों में भी इसका प्रयोग अत्यन्त लाभप्रद है।

मूल्य : 50 रुपये

बलदामृत

हृदय और उदर के रोगों में रामबाण है, इसके निरन्तर प्रयोग से फेफड़ों की निर्बलता दूर होकर पुनः बल आजाता है। पीनस (सदा रहनेवाला जुकाम और नजले) की औषधि है। वीर्यवर्धक, कासनाशक, राजयक्ष्मा, श्वास (दमा) के लिए लाभकारी है। रोग के कारण आई निर्बलता को दूर करता है तथा अत्यन्त रक्तवर्धक है।

मूल्य : 200 रुपये

आर्य आयुर्वेदिक रसायनशाला, गुरुकुल झज्जर

गुरुकुल झज्जर के प्रमुख प्रकाशन

१.	व्याकरणमहाभाष्यम् (५ जिल्द) (प्रदीप उद्योत, विमर्शसहित)	१५००.००
२.	अष्टाध्यायी (पाणिनि मुनि)	४०-००
३.	कारिकाप्रकाश (पं० सुदर्शनदेव)	२५-००
४.	लिङ्गानुशासनवृत्ति (पं० सुदर्शनदेव)	१५-००
५	फिट[illegible]दीप (पं० सुदर्शनदेव)	१०-००
[illegible]	[illegible]प्रवचनम् (६ भाग) ''	१२००.००
[illegible]	[illegible]ारसूत्राणि (आचार्य मेधाव्रत)	२५-००
[illegible]	[illegible]लहरी (मेधाव्रत आचार्य)	१५-००
[illegible]	[illegible]दिग्विजयम् (१-२ भाग) ''	४५०.००
१०.	निरुक्त (हिन्दीभाष्य) (पं० चन्द्रमणि)	३५०.००
११.	योगार्यभाष्य (पं० आर्यमुनि)	४०.००
१२.	सांख्यार्यभाष्य (पं० आर्यमुनि)	८०-००
१३.	मीमांसार्यभाष्य (३ भाग)	२६०-००
१४.	महारानी सीता (स्वामी ओमानन्द)	१००-००
१५.	छान्दोग्योपनिषद्भाष्यम् (पं० शिवशंकर)	४००.००
१६.	ओरिजनल फिलासफी ऑफ योगा	२५०-००
१७.	वैदिक गीता (स्वामी आत्मानन्द)	६०-००
१८.	मनोविज्ञान तथा शिवसंकल्प ''	३०-००
१९.	दयानन्दप्रकाश (स्वामी सत्यानन्द)	८०-००
२०.	धर्मनिर्णय (१-४ भाग)	१००.००
२१.	वैदिकविनय (१-३ भाग)	६०-००
२२.	देशभक्तों के बलिदान	२५०.००
२३.	सत्यार्थप्रकाश (स्वामी दयानन्द)	२००-००
२४.	संस्कारविधि (स्वामी दयानन्द)	५०-००
२५.	स्वाध्याय सन्दोह	२००.००
२६	सामवेद भाष्य (स्वामी ब्रह्ममुनि)	४००.००
२७.	स्वतन्त्रता संग्राम में आर्यसमाज का योग	१००.००
२८.	चारों वेद मूल	८८०-००
२९.	सामपदसंहिता	२५-००
३०.	सुखी जीवन (सत्यव्रत)	३०-००
३१.	महापुरुषों के संग में (सत्यव्रत)	१५-००
३२.	दैनंदिनी (सत्यव्रत)	३५-००
३३.	घर का वैद्य (वैद्य बलवन्तसिंह)१-५ भाग	१००-००
३४.	संस्कृतप्रबोध (आचार्य बलदेव)	२०-००
३५.	स्वामी ओमानन्द अभिनन्दन ग्रन्थ	२००.००
३६.	स्वामी ओमानन्द ग्रन्थमाला (४ जिल्दों में)	१०००.००
३७.	ब्रह्मचर्य के साधन (स्वामी ओमानन्द)	१००-००
३८.	प्राचीन भारत के मुद्रांक (भाग-१) ''	६००-००
३९.	स्वामी ओमानन्द जीवन (वेदव्रत शास्त्री)	४००.००
४०.	रामायणार्यभाष्य (दो भाग)	५००.००
४१.	महाभारतार्यभाष्य (दो भाग)	६००.००
४२.	प्राचीन भारत में रामायण के मन्दिर	२००-००
४३.	नौरंगाबाद की मृन्मूर्तियां	२५०-००
४४.	अगरोहा की मृन्मूर्तियां	८००-००
४५.	प्राचीन ताम्रपत्र एवं शिलालेख	२००-००
४६.	प्राचीन भारत के मुद्रांक (भाग-२)	३००-००
४७.	छन्दःसूत्रम् (हिन्दी भाष्य सहित)	१२०-००
४८.	आर्य सत्संग पद्धति	१०-००

आर.एन.आई. द्वारा रजि. नं. 11757
पंजीकरण संख्या- P/RTK/85-B/2020-22

सुधारक लौटाने का पता :-
गुरुकुल झज्जर, जिला झज्जर (हरयाणा)-124103
E-mail : gurukuljhajjar@gmail.com

ग्राहक संख्या

255. श्री विनय आर्य
आर्यसमाज 15 हनुमान रोड
नई दिल्ली

प्रकाशक आचार्य विजयपाल गुरुकुल झज्जर ने आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, दयानन्दमठ, गोहाना मार्ग, रोहतक में मुद्रक-डॉ० विक्रम सिंह शास्त्री के प्रबन्ध से छपवाया।